

इ. वि. का. राजवाडे संगोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिपि :— संख्या :—

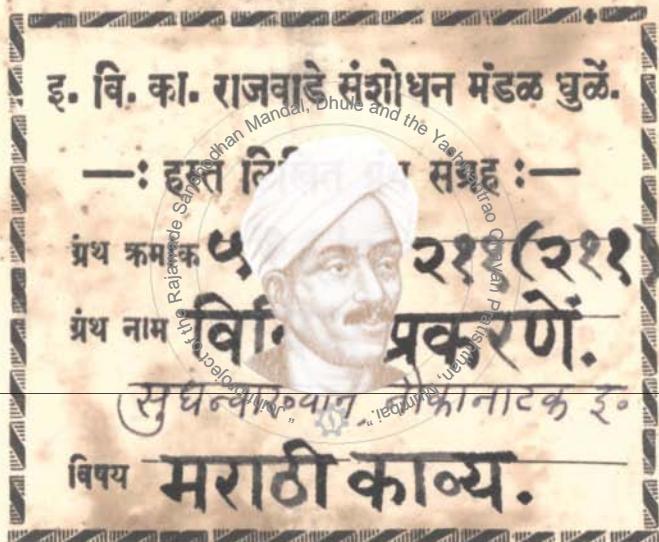
ग्रंथ क्रमांक ५२

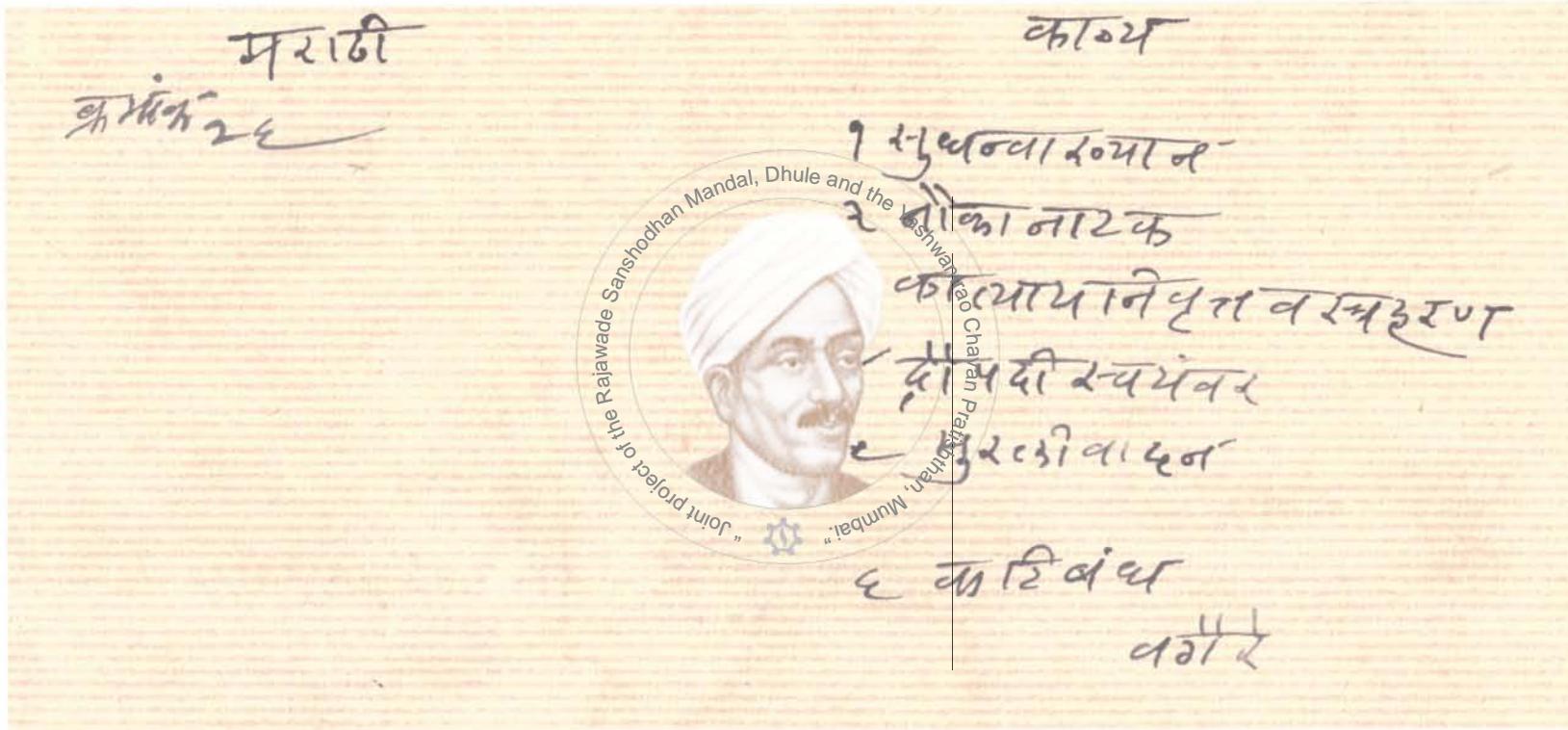
२१३(२११)

ग्रंथ नाम विद्वां प्रकरणे.

सुधान्वारवाहा लेखानाटक ५०

विषय मराठी काव्य.





(1)

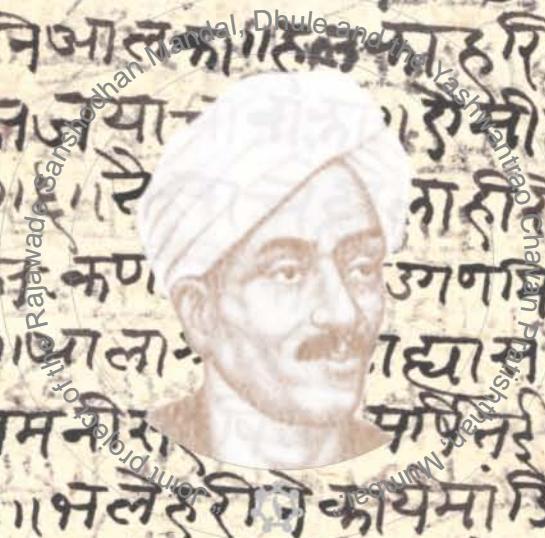
॥ नृगांडिले श्रीरुद्धा नी ॥ गंधवीदेह
॥ गाजि गणी ॥ सत्यस्वरासी आठवोनी ॥
॥ सानि धैमूगदि सासारि गमपधनी ॥० ॥
॥ जिन प्रामयक निसुखी ना उन्नपचाश
॥ त ॥ कोटि ताना ॥ रागनागिणी उभ्या येत
॥ नी ॥ रुद्धा लत्यसाहनी नयनी ॥ विभा
॥ समैरवनप्रभाधनापली ॥ ज्योगिभास
॥ बरी ॥ जोडि सै
॥ गाली भार्या
॥ अंग ॥ सोरट
॥ सेबहुमिटि
॥ मुलनोनितजनी ॥ होपरपलयानद्व
॥ ह ॥ विहागसोहे ॥ कनाओनग ॥ मालव
॥ सुभानि सरस विशष ॥ ललनप्रभती ॥ जय
॥ जयबनी ॥ गायणकरिनी ॥ वाघजनी ॥ मर
॥ दांजविणा ॥ तालधाणि ककडनाल ॥ वाघ
॥ बहुसाल ॥ सालसनांडुमटनी ॥ धीमि
॥ कटधिमिकिटि ॥ धीमधिमीधीधी
॥ थेष्यथेष्यत्रिकथेष्यमजाजिसुरंश

(2)

॥ तोयधिमाजनिन्ट ॥ एकनालिहुलांली ॥
॥ करीविताली ॥ तालीधाली ॥ यापरिचेन
॥ नाढुदे ॥ ५ ॥ इबेरीज्ञोने श्रीहसी ॥ र
॥ यकरीज्ञसे कौसारी ॥ कोजुकजालेन
॥ आवसरी ॥ दृक्काश्रोतेहोनिधरी ॥
॥ कैलासी तोसीविमनयुमि ॥ ध्यन
॥ माडिंले ॥ वसन्नगनादिलेसर्वसां ॥
॥ ले ॥ प्रणाम
॥ विजंब्रा ॥ प्रे
॥ लिवितिनहा
॥ गृहवच्चरी
॥ मजसकटपुले ॥ श्रीवध्यानेष्ठन
॥ माडिंले ॥ पूर्वमभनिजे ॥ व्याकमु
॥ रबोऽन्नने ॥ काव्यजनन्नच ॥ गर्वधा
॥ लिले ॥ नेनेविमन्दिरिच्छथापी
॥ नीवकटहेच्चीहजाले ॥ परिजन
॥ भ्यातो ॥ विक्षेपजालो ॥ रामनि
॥ देखो ॥ धरभारकुपिन होउमे

(3)

॥ आनंद ॥ रै सा तो हर नि न वी रा मा
॥ जै सी रा मा ॥ श्री हरि जी हि मनो गुरि
॥ रा मा ॥ का मा सा उ नि ॥ सा पत्नी ने हुः
॥ र ल ज तु की ॥ विस्व मां डिले ॥ मिकट नदन
॥ बहु र दन चारि कर्मा मुखी रा मे रा त
॥ घ लु नि सा न भा न कृ ष्ण गु द मो उ पि
॥ तो उ नि जा त्ता ॥ हर का न रि हो ठाउ का
॥ चम ज जे मा ॥ रै
॥ को धे ॥ हु ॥ रे
॥ ता भा न का ॥
॥ या स ॥ आ ला ॥
॥ तो दि न म नी र
॥ बो ले ॥ भले हरि गे काय मां डिले ॥ हु
॥ विस्य द नी भा अ दि पले ॥ न से च भा ता
॥ घडे ल न रि ल रि बहू भले ॥ मग स वे वे
॥ पक त्र हो उ नि ॥ मं त्र करि जे ॥ स्तो त्र बहु
॥ विध ज पत्ती हरि चे ॥ जय जय र छ मु नु
॥ द पता सर ॥ सुधा दा य का ॥ मं कपोष का ॥
॥ धा ने कर धा ॥ ए थी आ पा ॥ ने ज सभी



(५)

॥रण॥ गगणने द्वृगुण ॥ द्विषुणनायुजग
॥ त्रिषुणक्षेज हे ॥ लोयच्चलुरुण ॥ पचगुं
॥ णात्मक महीस्वरपा ॥ भूष्माकरीद्विन
॥ बंधुद्वयात्मा ॥ पूर्णवृष्माका ॥ हीजुपु
॥ मात्मा ॥ लगागोरात्मा ॥ विरचाकोष्टी
॥ यूपरीहरिचारारेसीवाचा ॥ वदोनि
॥ नमिलिक
॥ त्री ॥ द्वृभी
॥ दनतंहरी
॥ पवित्रिमध्यहो
॥ पूर्णवृष्मादुरपा ॥ उत्तमभृत्तज्जेन
॥ स्त्रेवा द्वृधरी ॥ भूष्माकरीद्वयेव
॥ विसंबिलंबे नसे नवसे ॥ लदेवा
॥ वृष्माद्युसुनविद्युत्सस्मी ॥ वर्मानेषु
॥ नीकुम्हाहरिच्याकरीत्तोनानाष्टेद
॥ गोपा द्वृगोपजनारुचक्रित्तसे ना
नाढेद ॥ ओहीवृत्यानेह ॥ ५ ॥ ५

Digitized by Rajawale Sanskrut Mandal, Dhule and the Venkannan Rao Chavhan Project, Mumbai.

(5)

॥ पदमुरली बादनश्री ॥

॥ मुरली बाज वी श्री हरी ॥ ध्री मिकि टि ॥

॥ ध्री मिकि टि जो जनन ननन ननन सुस्वर्ती ॥ धू ॥

॥ जो कुछ वा सीचे कवण मिलि ॥ मं

॥ जु वस्ते लुध्य रोजी ॥ आब छात्या

॥ जो बेडा बर्जी ॥ नित्य कर्मि चैसी बधा

॥ भास नी ॥ परिजाती घेसी गली ॥

॥ लेण ॥ तुषण ॥

॥ स जोडा ईगुं ॥

॥ नीजी ग कुचुकि ॥

॥ कज्जोल कुनुम ॥

॥ देविकोरल लिजा ॥ रा ॥ शुद्धि न मुख

॥ चर्चिली ॥ मेनद्युनि नेत्रभरविली ॥ नथोख

॥ पाप्या वेणि रमो विली ॥ नगरात्युगी निगम

॥ विली ॥ विद्या विज वरलेसे बुक्कि ॥ श्रोवण

॥ विविधना की घलिली ॥ कंटक्षणेदंडी वा

॥ धिली ॥ नस्त्वलेणि कर्णि टेविली ॥ हरसा

॥ काकटि बेहिली ॥ वाके नेष्टर करिले वि

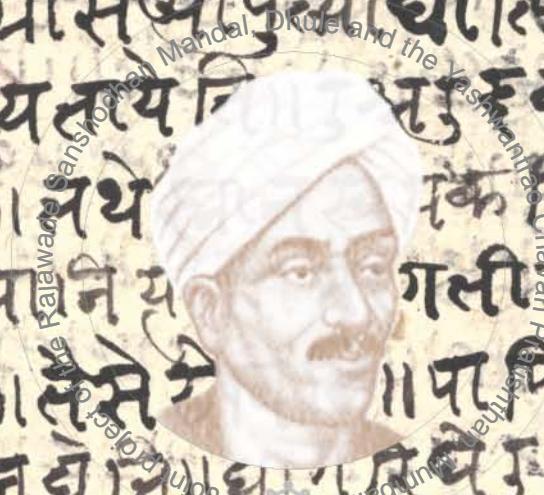
॥ ली ॥

Digitized by Sangeet Mandal, Dhule and the Yashwant Rao Oberoi Research Library, Mumbai

(6)

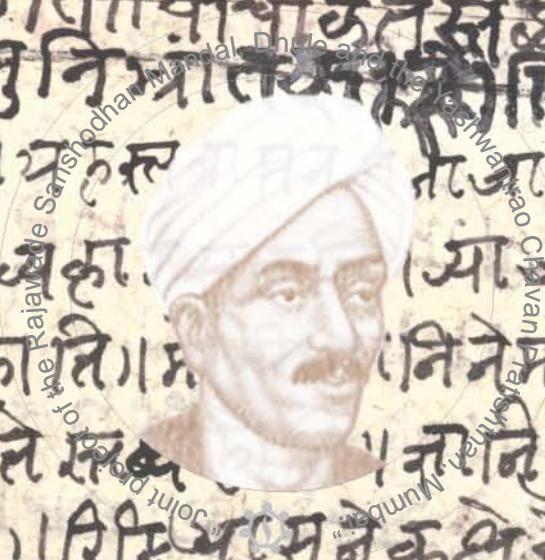
॥ दृढ़ा क्लिया पाई च छवी ती ॥ आनंद
॥ विजये काहु न घोली ॥ माज पठग की
॥ घोल ती ॥ ना नालेणी ठेसेरी ती ॥ त्रस
॥ कुप्रस कुशोभाभाषि ती ॥ नाह नीन
॥ गुले राधा बवी ॥ केसी पा ताँचुरे गव
॥ जिः दक्षम भटक मन्म चहु उपाहती
॥ दक्षन काड़न शाया कीः परस्पु
॥ देत्याकु गुय
॥ उर्ध्वक स्थिति
॥ नि ॥ ना द्वा च
॥ तिः पस्ति
॥ न करिया प्रसव यति मधुक दि
॥ लाइ पि भ क्षिति ॥ मेराहवि द्वुनिन
॥ वति ॥ आत्यहि प्रसु सुहाति ॥
॥ बाकेहु कुनि वा हुरये ति ॥ आथा
॥ वाया ना याति हृष्टि ॥ पाति वै सु
॥ जिस बे असति (सासि बाहु रवे दुनि

(३) ॥ नेति ॥ आत्मिप्रालिनेचरनचुरिति ॥
॥ आपुलाचरणश्च पुठेहाली ॥ रगरिग
॥ दिवरस्थणति ॥ निदिनिमप्रदुदुनि
॥ वैसली ॥ आख्युनख्यादिउभिरामा
॥ लि ॥ बाल्याभोजनघालुवैसति ॥ व
॥ हनिग्रासआपन्याधौतिलि ॥ पानि
॥ स्ननयतयनि ॥ चुक्कपानिभा
॥ टिहिं ॥ नथे
॥ निकपानय
॥ निति ॥ लैसे
॥ वोलुनद्याति ॥ वाग्यरयुनेपान्यामा
॥ ति ॥ द्युनियाति ॥ सजलद्यटासतेथ
॥ नायति ॥ नानाकासप्रहिसासिङ्गी
॥ तैशादाकुनिन्यकरि ॥ समस्ति
॥ यासोउनिमायासा हिनहुनिमा
॥ चुलागति ॥ थेकथोकयालतोडिलि ॥



(8)

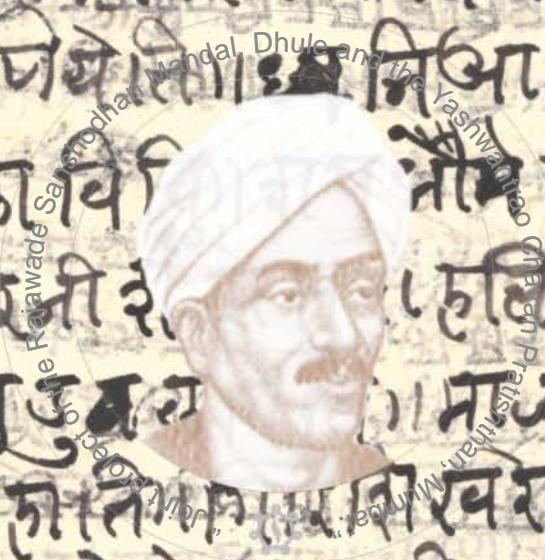
॥ एशामुलतिभां इश्वाहुरि ॥ १४ ॥
 ॥ प्रलरवात्सपनानाभाति ॥ हुदमी
 ॥ थापारीयहारसोउति ॥ असाप्या
 ॥ खानीतटस्ताहोति ॥ नानीध्यानिभ
 ॥ मरांहिति ॥ कोथाक्षेष्ट्रायहुरि
 ॥ सावेमुनिभ्रातक्षेष्ट्रायहुरि ॥
 ॥ मुरलिग ॥ यहुरू
 ॥ याचादिव्यक्ता
 ॥ तठलहुति ॥ निनेमसंउति ॥
 ॥ बाचाक्षेष्ट्रायहुरि ॥ नानिमुनिभ्रात
 ॥ फलहुति ॥ रिद्धिभसनेकहेवालि ॥ घ
 ॥ प्रिठकमिठकितहोति ॥ तीर्थपिरायन
 ॥ लभीलापसी ॥ थकितहोउनितभिवे
 ॥ सति ॥ उमयशीर्णविजभासति
 ॥ शलिष्टुलेहवनहेति ॥ अभ्युत्तु



The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Schwankao Chavhan Plat
Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Schwankao Chavhan Plat
Number: 1000

(9)

॥ ठुनपलालि ॥ यजमाना चिकवन
 ॥ गति ॥ योगी सिद्धभ्रमनकरि लि ॥
 ॥ मार्गस्तते प्राणी छाकि लि ॥ स्थिरास
 ॥ सनी मार्गथरि लि ॥ कायजालि
 ॥ फीरुणियेता ॥ निआयकुनि
 ॥ द्रिवलावि
 ॥ ति ॥ धरनी ३.
 ॥ उपायितुद्वय
 ॥ भाषुप ॥ जुति ॥ गायतीरवरते हिदुह्म
 ॥ तिता परशानेते गठबड़ाति ॥ इन्द्रा कुम
 ॥ द्वागठति ॥ न इम्रेवा कुसरिलाकृष्ण
 ॥ ति ॥ बापीतं ठगाउचं बैक्षणि ॥ तिथ
 ॥ दूरोवरते स्त्री ॥ लि ॥ अल्लचरजमनोउ
 ॥ इन्द्रावै सांडिती ॥ न जमि करौ क्ष



Late 18th century
 Miniature painting
 Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the
 Yashoda Pratishtha Committee

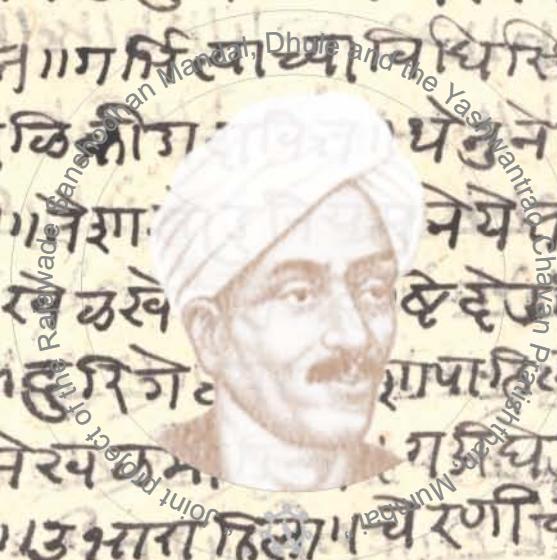
॥ हाती ॥ गर्व्याघनि कृतै सजी ॥ आ
 ॥ उदार कमिलुनि आसदी ॥ ना नाठा ती
 ॥ दूसे ऐकली ॥ पहिस्वपद्य कभरोती
 ॥ चेंव्रस्त्वय वेगविसहीती ॥ गुबेरवरण
 ॥ समिश्रपष्विनि ताडनि श्रवणदेती ॥
 ॥ सुरासुरसुकृ
 ॥ चिराहची ॥ २
 ॥ दादुनि आकुग
 ॥ साजनि मन
 ॥ नानीनचिहाहाण ॥ इमरावतो कायगणती
 ॥ मनोहरण सुकृपरोणि आधरी ॥ ३ ॥ अ
 ॥ गम्य चरित्र पूर्ण पवित्र सांब मित्र जगत्त्वभ
 श्री ॥ भक्त कै बारि आनं न स युण रांते ॥ मूलि मेह
 ॥ लोकनाथ ॥ धर्मस्थापित ॥ दुष्कृत नाचेर्द
 ॥ न करत्वा दरण भालया उडीत ॥ नामे
 ॥ उपाची आती शीत ॥ घेनी त्याली निजपद



Sambodhan Mandal, Dhule and the Rashivanta
 Chavhan Priya
 "Jotir Prakash Mumbai"

(11)

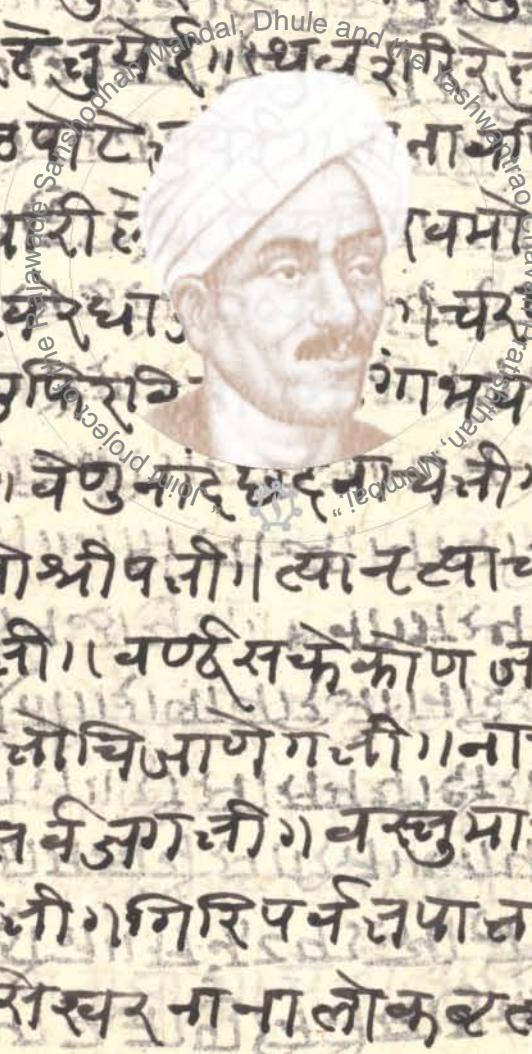
॥देन॥भावजाणुनित्तैसायुक्ता॥दास्ताच्च
॥हिंसास्तहोन॥संकटप्रलयात्प्रेरधावत्ता॥
॥नीचकामस्त्वयेस्मारित्ता॥जगपणकोणन
॥चीपाहात्ता॥तैसासमर्थक्षिराध्वीवासी
॥विश्वमूर्त्ती॥शषावरज्जेनिद्रित्ता॥चरण
॥सेवेकमठायुक्ता॥मनाभिस्पत्तीकमठ
॥रोम्मित्ता॥गर्भस्त्वाच्चावधिस्थित्ता॥त्ता
॥हगोकुछित्तीउ
॥चारित्ता॥तैशा
॥द्येउनरावेछरवे
॥द्वित्ता॥त्तुरित्ते
॥नित्तेनेरवक्त्तम्
॥आत्ता॥उभात्ताहित्ता॥चरणीक्वेरणहेडुग
॥टवित्ता॥कठवेट्टिलीकात्तियोगंजी॥कृष्ण
॥काटियिवानाकडी॥गुञ्जाहरप्रस्तुकीप्रग
॥टिम्मेयुपि घे वरिफउफङ्गी॥सुरलीभाष
॥री॥ध्यनीमजरी॥गाईसित्तोनामेपाचा
॥री॥गंगेयेये॥दृष्टेयेये॥गोईयेये॥नर्म
॥द्येये॥कासीयेये॥भागीरथीये॥तुगभ्रे



Joint Project of the Rishi Veda Pantheon, Van Mandir, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Research Foundation, Mumbai.

(८)

॥४॥ भावन चैक्षये ॥ नाम एवे रौप्य पोद सुवर्ण
 ॥ मटंगे ये ॥ विश्वदृष्टु ये ॥ भाविभासा देहुये
 ॥ ५ ॥ सुगुण रपेहुये ॥ जग बावज्जे चुये ॥
 ॥ दनुजमान के लुये ॥ न छला इके लुये ॥
 ॥ कर्म कर्म लुये ॥ धर्म वस्य लुये ॥ ॥ ६ ॥
 ॥ न घोर हे लुये ॥ अथव रशी रे लुये ॥ ॥ ७ ॥
 ॥ विशाल पोट ॥ नार्तनी नाना
 ॥ मिथुन धरी हे ॥ विमाहि जाले
 ॥ भगवत्यरधा ॥ चरण धाट
 ॥ जीषु दुष्किराति ॥ गंभय जी गुंगा
 ॥ कर्ती ॥ वेणु नांद छद नाथ जी गस्यतो ॥
 ॥ न बलो श्रीपती ॥ त्यन ट्याची तोथो
 ॥ रस्याती ॥ वर्ण सके कोण जगती ॥
 ॥ त्याचालो चिजाण गती ॥ नाचुलगा
 ॥ जी ॥ सर्व उक्त गती ॥ वस्तु माभाषा दि
 ॥ न गथली ॥ निरिपर्वत पाक्षु वर
 ॥ स्वर्गीरि स्वर ना नालो कृत्यां डासा



(B)

॥लीजासत्तौ॥ आन् ॥ युक्तसुद्धमद्वा
॥ उपाजप्तवस्थिर
॥ तालेनापोले
॥ हरीकरीत्॥ अ
॥ तधन्यधन्य
आयघोस्य
गम्भीला
णीमाधवसु
पुनाजिरी॥ ३॥

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Krishnawadeo Chavara Pratiashikhan Mumbai.



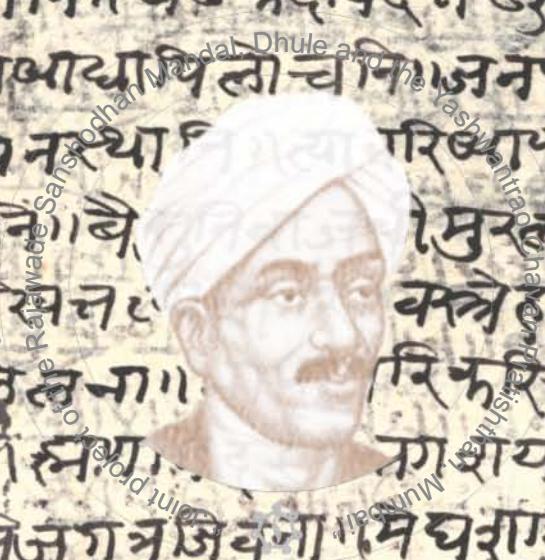
०८

माप्त वा "पद कात्यायनि वर्ल वस्त्र हरण प्रारंभ
॥ गेषिका वस्त्रे हरि तो हौरि हासुरलिवाला ॥ ४० ॥
॥ येके दिव सिंप्रभान्तका वी ॥ संगे घेउनि पाठज
॥ पावी ॥ कौलुक दाखवितो बन मावी ॥ भालायि
॥ रिकालि दै कावी ॥ ०३८८८ नद तो सुरलिवाज
॥ वी ॥ छुद छुद नांड वा प्राज वी ॥ राग रंग भालाप
॥ माज वी पाठुनि रमा टकलाज वि ॥ ०३९ ॥ नंद नंद
॥ आनंद नंद नंद मंद
॥ केरभहरी भा
॥ जन्म वरि मंज
॥ सोम भा सोम
॥ कृष्ण पाठुता कृष्ण
॥ व्यरक्षि ला ॥ किंट कुल नववन माला ॥
॥ कौलुभ मणि हाथूष पक्कला ॥ श्री वल्ला किंले
॥ पद हृदया ला ॥ वैजयंचित्तमाळ वि शाला ॥
॥ कुदरहन तो इहु वदन ॥ आपरो श्रृंबिं वसमा
॥ नमिरले ॥ कृमान भ्रुङ्कुटि ॥ प्रसंग दहशी ॥
॥ कुखु मिवा मणि ब्रेग भज कंटि ॥ तुउसी माव
॥ लया करदाई ॥ अंगिजगो ऐचरं नउटि ॥

(15)

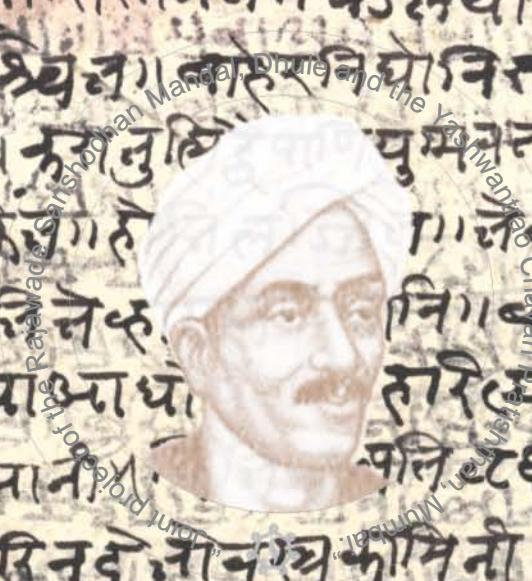
॥ लवियस्ति करुरि पव वर्गि ॥ रार्णव न त्रजे पश्य
॥ गदाधरि चार कराबलि सारभायुधे ॥ दैत्या
॥ वरजेतक वति कोधे ॥ चरणि नेपुर छार स्तु
॥ सुण शब्दे ॥ पस्ति नवन ब्रिद जेग निवे ॥ याप
॥ रुचा महाराज ॥ सकव्य सिरनाज ॥ स्का
॥ भियदुराज रसि लिलाज ॥ द्वौपदि जाहे
॥ मार्गि हुकु घालना ॥ भयन वथाला प्रजी
॥ पाढ़ि लो ॥ उद्याचे
॥ तरासे गोपाल
॥ लग १० ॥ गोपवे
॥ सामान ये कुमार
॥ मारि ॥ सकार
॥ तमारि क्यत प्रभार प्रभू गरा पउनि है पंज
॥ रुमाइ रारि ॥ मार्गि रिष्ट हामुरव्य आई हरी ॥
॥ प्रिय करबो लेशाल्लो नेखरि ॥ पठेसि लाचि
॥ बहु जन धरारि ॥ वस्त्र येउनि उद कावा हरी ॥
॥ प्रवेशात्मा त्याभावु चारी ॥ नमाझिडि
॥ मग्नहोउनि ॥ जिउति उद काच्या हस्थानि ॥
॥ अपनि आरघ हृदर्धरनि ॥ विभषर

॥मलिसव्यकामिनि॥हेषा ज्ञानिभगवंजजा
॥शुनि॥कृशिभागभनसारंगपाणि॥स्त्रि
॥यात्तज्जित्त्यासिपादुनि॥हुरजानिउदका
॥लनिघोनि॥चरित्रपादुनिपक्षेपाणि॥
॥सर्ववस्त्रयकृतक्षेनि॥बाधुनिज्ञेसेनेत
॥उच्चलोनि॥चढे कदेबिदेज्ञेदुनि॥ज्ञि
॥श्रद्धक्षमाद्यापिलोचनि॥जनपाहानि
॥ददाननरथा॥
॥चडोनि॥वे
॥नारिदेसेनेत
॥हुत्रिलुक्तना॥
॥हनोस्त्रा॥
॥आमुत्रज्ञगत्रजिवना॥मधरामा॥आ
॥सारामा॥सिजवाजलेमनोमसमा॥
॥जात्राईद्धातुशचिकामालाभागमानि
॥गमायोग्यजुष्टाकीमुनानमहिमा॥
॥मनोदहानोआकिर्तिकरका॥हाने
॥ज्ञानुशिष्यापदपद्मा॥मादिन्निरधा
॥घरिच्यारामा॥त्वाजनाचविप्रभुआ



(१८)

॥ नामा ॥ दुरुचिरामा ॥ वचनापेमा ॥ ७
 ॥ तुनि हास्यायैजगपामा ॥ अणहरितो
 ॥ कायैत्याप्रवर्जने साप्रवन्ननभहोउनि
 ॥ दृग्गम्भरहेवपुषुवत्तदोषप्राप्ते
 ॥ तुलुभासिसाप्रवन्न ॥ प्रउत्तयाचेष्या
 ॥ प्रायश्चित्यन् ॥ लाहरपिघोनित्यनम्
 ॥ स्वत्त ॥ कुलुकुलि ॥ युम्बन्द ॥ रैलु
 ॥ निशकिरु ॥ है
 ॥ लावित्तित्तेक्
 ॥ लम्याभाधे
 ॥ र्यानमान
 ॥ नि ॥ हरिनदे ज्ञानाय कामिनी ॥ हैस
 ॥ मजोनि ॥ लगजहारुनि ॥ नमिति भातुसि
 ॥ जोउनि पाणी ॥ हारस्यवित्तोविदानी
 ॥ वृपायेउनि ॥ भरवसमहुनि ॥ दिघलेवस्य
 ॥ लयालाहुनि ॥ धाउनि सायालगालि च
 ॥ रणी ॥ रैसीभाघदिलहरिचीकरणी ॥
 ॥ नरहरिकर्णिलिना ॥ ३ ॥ ५ ॥



"Digitized by Saroshooan Mandal, Dhule and the Yeshwantee Chevening Library, Number 100"

॥पदनौकानाटकलिख्यने॥⁽¹⁸⁾

॥हरियमुनालिपिखेवे॥ गोपिसहकुंजनि
॥हरी॥६०॥ चनीयेहुनिवंद्यचनी॥ घेउने
॥गववनि॥ क्रिंउत्तोचक्रपाणि॥ त्तोकोने
॥येकेदिनी॥ यमुनेतस्थानि॥ पानत्तरा
॥रंगपानि॥ आकासित्तारागणि॥ ज्ञेशात्या
॥निलंबिनि॥ चंद्रास्त्वेदवि॥ लसि॒पशोभा
॥जनि॥ पाहिलि
॥णि॥ बखुम
॥नी॥ बद्धासिव
॥नी॥ दिसत्तिन
॥क्रिः नेउदकरथातो॥ हेआवउलेमनी॥
वोल्कत्तेराधारा
॥कदित्तेविनव
॥॥यायमुनेचस्था
नयामवेसुनि॥
॥आसिलोकासिनि॥ तुबाछकुआज्ञानि॥
॥चालविरु॒साकोक्ति॥ नदिसेचनयनी॥
॥त्रैकोनिद्धकानि॥ कायबोलत्तधाणि॥
॥म्याचालवित्ता॒६५णि॥ चावेत्तिरालागो
॥वि॥ मानिलेसकछाजनि॥ नावेत्तवे
॥सोनि॥ रमिभारूठेकोनि॥ त्यानावेचि



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com